खुशी का फरिश्ता

काफी वर्षों से जब भी किसी ग्रूप को मिलते, दादी जी एक ही बात कहते थे 'मैं बहुत खुश हूँ' । दादी जी इतने आनंद से सम्पन्न रहते थे तो ये विचार करने की बात है कि उनकी सम्पूर्ण रूहानी यात्रा ही कितनी खुशियों से भरी हुई रही होगी जो अब भी सदा ही बेफिक्र बादशाह, रूहानी मौज में नजर आते थे।

सम्पूर्ण विश्वास पात्र

आदि से दादी जी अपनी पूर्ण ईमानदारी के कारण बापदादा के सम्पूर्ण विश्वास पात्र थे तब तो यज्ञ भण्डारी संभालने के निमित्त बने।

इकॉनामी की अवतार

बाबा-मम्मा उन्हें मनी प्लांट कहते थे । यज्ञ में जरूरत के समय सदा उनकी बचत काम आती थी।

ज्ञान मुरली का बहुमुल्य योगदान

दादी जी ही वह महान हस्ती थे जो साकार बापदादा की तेजस्वी वाणी को बहुत जल्दी शॉट हैंड में लिख लेते थे। उन्हीं के बदौलत आज भी हम उस समय (टेप मशीन के पहले) की साकार मुरलियों को हुबहू शब्द बाइ शब्द पढ़ पाते हैं।

समाने की महान शक्ति

दादी जी की सम्पूर्ण विश्वास पात्रता की विशेषता के कारण बाबा ने उन्हें पत्र व्यवहार में राइट हैण्ड के रूप में निमित्त बनाया था। पत्र में सेवा समाचार के रूप में दादी जी को खुशखबरी या अच्छी बातों के समाचार के साथ-साथ कुछ सेंटरों की कमजोरी व समस्याओं की बातों के समाचार भी ज्ञात होते थे, फिर भी दादी जी इतना शुद्ध-हृदय दिव्य-दर्पण होने के कारण ही दादी जी में इतनी विशाल सागर समान समाने की शक्ति थी, कि जो सदा उनके मुख से हर ब्राह्मण आत्माओं के प्रति और सेन्टर के प्रति शुभ भावना के साथ-साथ कल्याणकारी बोल ही निकलते थे।

बाबा की सौगात

दादी जी को साकार बाबा ने एक घड़ी सौगात में दी थी जो बिना बैट्री के, पल्स पर चलती है। दादी जी को इसका इतना रूहानी नशा था कि वह सदा पहने रहते थे और सदा क्लास में दिखाते थे।

अन्त तक सेवा

दादी जी अन्त तक अपनी सेवा पर उपस्थित रहे। हर बाबा मिलन का टर्न हो या योग तपस्या भट्टी व शिविर प्रोग्राम हो, यदि दादी जी से यज्ञ-कारोबार हेतु कोई भी मिलना चाहे तो दादी जी से बहुत सहज रीति से मिलते थे।

एक बाबा दूसरा न कोई

दादी जी की एक और मुख्य विशेषता थी जिस कारण वे यज्ञ की भंडारी और पत्र व्यवहार के निमित्त रहे, वह थी "एक बाबा दूसरा न कोई"। क्योंकि भल

उनकी संगठन में सबके साथ बहुत अच्छी मैत्री थी, परन्तु किसी एक प्रति भी विशेष अधिक झुकाव नहीं था।

निर्मान-चित्त

दादी जी नम्रता की देवी थी । भल उन्हें यज्ञ की बहुत मुख्य ऊँची सेवाओं (भण्डारी वा पत्र-व्यवहार) की जिम्मेवारी थी, परन्तु इस बात का उन्हें जरा भी अभिमान नहीं था । दादी जी बिल्कुल निरहंकारी-निर्मान-नम्रचित्त हो करके रहीं।

वर्णन नहीं

दादी जी ने कभी अपनी सेवाओं का वर्णन नहीं किया (शायद इसी कारण उनकी सेवाओं को सभी कम जानते)। यह दादी जी का स्वभाविक स्वभाव रहा और इसी गुप्त-निमित्त भाव के कारण उन्होंने जबरदस्त आध्यात्मिक कमाई व प्रालब्ध जमा की है।

अन्तर्मुखी

दादी जी को ज्यादा भाषण करने या बोलने का शौक नहीं था। वह सदा अन्तर्मुखी रह बाबा की दी हुई सेवा प्यार से करना पसंद करते थे। संगठन में बोलने का अवसर मिलता तो सदा “हाँ जी” का पाठ अवश्य बजाते थे और 2-4 वाक्यों में ही दिल छू लेते थे।

ईश्वर के साथ

ईश्वर के साथ रहने वाली दादी जी का नाम (ईशु) हमें हमेशा ईश्वर के साथ रहने की प्रेरणा देता रहेगा।